कटेली (स्वर्णक्षीरी)

के

गुण तथा उपयोग

मूल्य ।॥)

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, देहली ६

॥ ओ३म् ॥

स्वर्णक्षीरी (कटेली) के गुण
तथा
उसके उपयोग

जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा करना केवल स्वर्णक्षीरी द्वारा ही बतलाई गई है।

लेखक :

श्री हकीम मौलवी मुहम्मद अबदुल्ला साहब

सम्पादक :
रामस्नेही दीक्षित

प्रकाशक :

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार देहली ६ ।

प्रथमबार सन् १९५४ मूल्य ॥।)

प्रकाशक :
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार,
देहली ६।

मुद्रक:
त्यागी फाइन आर्ट प्रेस,
कटरा खुशहाल राय,
देहली।

भूमिका

मैंने प्रत्येक पुस्तक की भूमिका में सदैव ही इस बात को दोहराया है कि परमब्रह्म परमात्मा ने इस संसार में कोई भी वस्तु व्यर्थ उत्पन्न नहीं की है। परन्तु इस बात को जानते हुए भी हम उनका केवल तिरस्कार ही नहीं करते हैं बल्कि उनको अपने हाथों से नष्ट भी कर देते हैं। किन्तु उस ईश्वर की अनुकंपा महान् है जो कि यह सब देखता हुआ भी कभी रुष्ट नहीं होता।

संसार में अनेक जड़ी बूटियाँ हैं, उन्हीं में से एक स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी) भी है जो कि भारतवर्ष में अधिकांश मात्रा में पैदा होती है। विशेषकर राजपूताना तथा पंजाब में सर्वत्र अत्यधिक उत्पन्न होती है। परन्तु खेद की बात है कि हम लोग इससे तनिक भी लाभ नहीं उठाते हैं और व्यर्थ में यों ही नष्ट भ्रष्ट कर डालते हैं। हालांकि इसमें अनेकों गुण ऐसे लुप्त हैं कि जिनकी तुलना नहीं की जा सकती, जिनसे आवश्यकता के समय बिना कुछ खर्च किये ही हज़ारों रुपयों का काम निकल सकता है।

मैंने इस पुस्तक को बड़े परिश्रम के साथ लिखा है इस का अनुमान वही कर सकता है जिसने कभी यह कार्य किया हो। आशा है कि पाठकगण ! इस पुस्तक-को अपना कर हमारे परिश्रम को सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे।

लेखक—

स्वर्णक्षीरी के गुण
तथा
उसके उपयोग

यह एक बूटी है, जो कि लगभग भारतवर्ष के अधिकांश भागों में, विशेषकर राजपूताना तथा पंजाब में सर्वत्र पायी जाती है। इस की ऊँचाई आध गज़ से लेकर सवा गज़ तक पाई जाती है। इसके पत्ते कटीले होते हैं जिन पर श्वेत रंग की धारियाँ होती हैं। शाखाओं की लम्बाई एक या डेढ़ बालिश्त के लगभग होती है। यदि इस की शाखा को तोड़ दिया जावे तो पीले रंग का दूध निकलता है। कुछ समय के पश्चात् अत्यन्त सुन्दर फूल निकलते हैं और पककर चार चार खाने के डोंडे लगते हैं जिनमें से काले रंग के दाने सरसों सदृश निकला करते हैं। छोटे बालक उन दानों को लेकर अंगारों पर डालकर उनको पटाखों की भाँति चटपटाते हैं और बड़े सन्न होते हैं।

उत्पन्न होने की ऋतु

जेठ, असाढ़ के महीनों में अत्यधिक उत्पन्न होकर वर्षा के दिनों में भली भाँति फलती फूलती है। अथवा कई प्रान्तों में तो इसको यदि न काटा जावे तो सभी फसल खराब हो जाती है।

स्वर्णक्षीरी के नाम

इस का प्रसिद्ध नाम—सत्यानाशी है । संस्कृत में हेमक्षीरी, स्वर्णक्षीरी आदि के नाम से कहते हैं । बंगाली में—स्वर्णक्षीरी, मराठी में--काँटे धोतरा, गुजराती में—दासड़ी, अरबी में-शजर तरडलशूम, फारसी में--बाद जान दस्ती आदि के नाम से पुकारते हैं ।

स्वभाव—द्वितीय श्रेणी में कइयों के समीप तृतीय श्रेणी में गर्म शुष्क है ।

भेद--सत्यानाशी दो प्रकार की होती है । प्रथम पीले फूल वाली बहुतायत से मिलती है और दूसरे श्वेत पुष्प वाली जो कि बहुत कम प्राप्त होती है । इससे रासायनिक लोग तूतिया की श्वेत वर्ण की भस्म तैयार करते हैं । जो कि गंधक का तेल छुड़ाने में अत्यन्त प्रभावक है ।

स्वर्णक्षीरी का तेल बनाने की विधि

(१) इच्छानुसार स्वर्णक्षीरी के बीज लेकर किसी तेली से तेल निकलवा लें। अत्यन्त स्वच्छ पीत वर्ण का तेल तैयार होगा ।

(२) यदि बादाम के तेल निकालने का पात्र मिल सके तो उससे भी यथाविधि तेल निकाला जा सकता है।

(३) बीजों को कूंडे में डाल कर पीस लें जब अत्यन्त कोमल कल्कसा बन जाय तब उसमें गर्म पानी

का छींटा देकर तेल निकाल लें। इस विधि से तेल निकालने की पूरी विधि बादाम के गुणों वाली पुस्तक में अंकित की गई है परन्तु उपर्युक्त विधि से भी निकाला हुआ तेल भी अत्यन्त उत्तम होता है। इस को निकाल कर सुरक्षित रखें और वर्ष भर सेवन करके लाभ प्राप्त करें। यह तेल दीपक के जलाने के भी काम आता है जिसमें यह विशेषता है कि साफ़ रोशनी देने के अतिरिक्त अत्यन्त सूक्ष्म जलता है।

सिर रोग

सिर रोग तो अनेक हैं परन्तु जिन रोगों में स्वर्णक्षीरी द्वारा लाभ प्राप्त किया जाता है वे निम्नांकित प्रस्तुत किये जाते हैं।

सिर पीड़ा

योग--स्वर्णक्षीरी के पत्ते आवश्यकतानुसार लेकर कूट लें और किसी वस्त्रमें रखकर, निचोड़कर उनका रस निकाल लें। तत्पश्चात् उस रस को किसी कलईदार बर्तन में डाल कर अत्यन्त धीमी आँच पर पकावें जब उस का रस गाढ़ा हो जावे तो उसे उतार कर शीत लकरके गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा कर किसी शीशी में सुरक्षित रख छोड़ें। यह गोलियाँ अनेक रोगों के निवारणार्थ उपयोगी हैं।

सेवन विधि—आवश्यकतानुसार एक गोली लेकर

गर्म दूध या ताजे पानी के साथ सेवन करें।

लाभ--स्थायी शिरशूल के लिए अचूक दवा है।

द्वितीय योग

योग—शिर पीड़ा को शान्त करने के लिए स्वर्णक्षीरी वाला तेल नं० १ की सिर में मालिश करें। ईश्वर की कृपा से सिर पीड़ा शीघ्र ही शान्त हो जावेगी अत्यन्त लाभप्रद तेल है।

आर्शिक शिरशूल

सिर पीड़ा अनेक कारणों से हुआ करती है उनमें से एक आर्शिक पीड़ भी है। आर्शिक (बवासीरी) शिरशूल को दूर करने केलिए प्रत्येक औषधि से लाभ नहीं हुआ करता है। परन्तु यहाँ पर एक चुटकला प्रस्तुत किया जाता है जो कि इस रोग के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

योग—स्वर्णक्षीरी की जड़ लेकर पानी में घिस कर ऊपर लेप कर दें यदि बवासीर के मस्से भी बाहर हों तो उन पर भी लेप कर दिया करें इससे मस्से तथा आर्शिक सिर पीड़ा जाती रहती है।

आधाशीशी

आधाशीशी के निवारणार्थ लोग टोना-जादू, जन्त्र-मन्त्र, झांड़ फूँक आदि किया करते हैं, परन्तु इनसे कुछ लाभ नहीं होता है। आधा शीशी को दूर करने के लिए

निम्नांकित एक सरल योग प्रस्तुत किया जाता है।

योग—स्वर्णक्षीरी के पत्ते कूट कर उन का रस निकाल लें और उसको मन्द मन्द आग पकावें जब गाढ़ा सा हो जावे तो गुनगुना लेकर पीड़ास्थान पर लेप कर दें।

लाभ—आधाशीशी की पीड़ा शीघ्र शान्त हो जायगी।

निद्रा लाने वाली औषधि

निद्रा स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जिस व्यक्ति को निद्रा न आती हो उसको निम्नांकित योग सेवन करावें ईश्वर की कृपा से नींद आने लगेगी।

योग—स्वर्णक्षीरी तेल १ बूंद बताशे में डाल कर खिलावें और ऊपर से दूध पिला दें। ईश्वर कृपा से प्रथम बार में ही लाभ प्राप्त होगा और कुछ समय के सेवन से पूर्ण निद्राआने लगेगी। क्योंकि स्वर्णक्षीरी उच्च-कोटि की ओषधि है।

नेत्र-रोग

नेत्रों के अनेक रोगों के लिए स्वर्णक्षीरी एकमात्र सर्वोत्तम ओषधि है। यहाँ पर कई एक रोगों का वर्णन उनके अनुभत योग सहित वर्णन किया जाता है।

नेत्रों का दुखना

नेत्रों का दुखना एक बुरा रोग है इसके कष्ट को वे ही मनुष्य जानते हैं जो कि कभी इस रोग के रोगी

रह चुके हो। इसके उपचार के लिए नीचे एक योग उपस्थित किया जाता है जो कि अनेकों बार का अनुभूत है।

प्रथम योग

योग—स्वर्णक्षीरी (सत्यानासी) का दूध जो कि पीले रंग का होता है उसे लेकर सलाई के द्वारा नेत्रों में लगाने से पूर्ण आराम हो जाता है।

द्वितीय योग

स्वर्णक्षीरी के फूल तोड़ने पर चिकना द्रव्य अंगुलियों पर लगा हुआ रह जावे उसको इसी प्रकार नेत्रों में लगा लीजिये। ईश्वर की कृपा से दुखये हुते नेत्रों की पीड़ा उसी समय शान्त हो जावेगी।

नेत्रों के लिए अंजन

यह अंजन नेत्र कण्डु, धुन्ध, जाला, नेत्रों से पानी निकलना आदि रोगों के लिए अक्सीरी है। जो सज्जन बनाकर इसका अनुभव करेंगे वह ईश्वर की कृपा से अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे।

योग—स्वर्णक्षीरी का रस १ तोला, गाय का मक्खन १ तोला जो कि २१ बार पानी में धुला हुआ हो। दोनों को काँसी की थाली में डाल कर नीम के सोटे से कम से कम १० घण्टे तक रगड़कर किसी स्वच्छ शीशी में भर कर रखें।

सेवन विधि—ईश्वर का नाम लेकर १-२ सलाई

निम्नांकित एक सरल योग प्रस्तुत किया जाता है।

योग—स्वर्णक्षीरी के पत्ते कूट कर उन का रस निकाल लें और उसको मन्द मन्द आग पकावें जब गाढ़ा सा हो जावे तो गुनगुना लेकर पीड़ास्थान पर लेप कर दें।

लाभ—आधाशीशी की पीड़ा शीघ्र शान्त हो जायगी।

निद्रा लाने वाली औषधि

निद्रा स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जिस व्यक्ति को निद्रा न आती हो उसको निम्नांकित योग सेवन करावें ईश्वर की कृपा से नींद आने लगेगी।

योग—स्वर्णक्षीरी तेल १ बूंद बताशे में डाल कर खिलावें और ऊपर से दूध पिला दें। ईश्वर कृपा से प्रथम बार में ही लाभ प्राप्त होगा और कुछ समय के सेवन से पूर्ण निद्राआने लगेगी। क्योंकि स्वर्णक्षीरी उच्च-कोटि की औषधि है।

नेत्र-रोग

नेत्रों के अनेक रोगों के लिए स्वर्णक्षीरी एकमात्र सर्वोत्तम औषधि है। यहाँ पर कई एक रोगों का वर्णन उनके अनुभत योग सहित वर्णन किया जाता है।

नेत्रों का दुखना

नेत्रों का दुखना एक बुरा रोग है इसके कष्ट को वे ही मनुष्य जानते हैं जो कि कभी इस रोग के रोगी

रह चुके हो। इसके उपचार के लिए नीचे एक योग उपस्थित किया जाता है जो कि अनेकों बार का अनुभूत है।

प्रथम योग

योग—स्वर्णक्षीरी (सत्यानासी) का दूध जो कि पीले रंग का होता है उसे लेकर सलाई के द्वारा नेत्रों में लगाने से पूर्ण आराम हो जाता है।

द्वितीय योग

स्वर्णक्षीरी के फूल तोड़ने पर चिकना द्रव्य अंगुलियों पर लगा हुआ रह जावे उसको इसी प्रकार नेत्रों में लगा लीजिये। ईश्वर की कृपा से दुखये हुते नेत्रों की पीड़ा उसी समय शान्त हो जावेगी।

नेत्रों के लिए अंजन

यह अंजन नेत्र कण्डु, धुन्ध, जाला, नेत्रों से पानी निकलना आदि रोगों के लिए अक्सीरी है। जो सज्जन बनाकर इसका अनुभव करेंगे वह ईश्वर की कृपा से अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे।

योग—स्वर्णक्षीरी का रस १ तोला, गाय का मक्खन १ तोला जो कि २१ बार पानी में धुला हुआ हो। दोनों को काँसी की थाली में डाल कर नीम के सोटे से कम से कम १० घण्टे तक रगड़कर किसी स्वच्छ शीशी में भर कर रखें।

सेवन विधि—ईश्वर का नाम लेकर १-२ सलाई

प्रतिदिन नेत्रों में डाला करें।

ममीरे का सुरमा

योग--काला सुरमा १ तोला, काली मिर्च १ माशा को बारीक पीसकर स्वर्णक्षीरी का दूध ६ माशा मिश्रित करके भली भाँति बारीक पीस कर किसी शीशी में सुरक्षित रख छोड़ें।

सेवन विधि--रात्रि को सोते समय १ या २ सलाई ईश्वर का नाम लेकर नेत्रों में लगाया करें। इस से आँखों की रोशनी बढ़ती है। यह सुरमा ममीरे के सुरमे की भाँति लाभप्रद है।

लाभ--धुन्ध, जाला, आँखों से पानी आना, तथा आंखों की खुजली के लिए लाभदायक है।

नासिका तथा कर्णरोग

नाक तथा कान के रोग तो अनेक हैं कि जिन पर एक पुस्तक तैयार की जा सकती है। परन्तु यहाँ पर केवल वे ही रोग लिखे जाते हैं जिन के लिए स्वर्णक्षीरी एकमात्र औषध है।

नाक से किसी प्रकार की सुगंधि न आना

प्रायः कई कारणों से नाक की सूँघने की शक्ति जाती रहती है जिस से रोगी को किसी वस्तु की सुगन्धि में भेद प्रतीत नहीं होता है। उसके लिए कन्नौज का इत्र और मिट्टी का तेल एक सदृश हैं। अतः इस रोग

को निवृत्त करने के लिए निम्नांकित एक योग प्रस्तुत किया जाता है जो कि बड़ा ही उपयोगी है।

योग--बांसमती चावल २-३ माशा लेकर उनको स्वर्णक्षीरी के दूध से तर करके, राया में खुश्क करके, बारीक पीस लें और किसी शीशी में सुरक्षित भर कर रखें। इस औषधि को हुलास की भाँति सुंघाया करें। दूसरे १ माशा स्वर्णक्षीरी का दूध लेकर पाव भर गाय के दूध में मिश्रित करके पिलाया करें

लाभ--ईश्वर की कृपा से कई रोज़ के सेवन से रोग समूल नष्ट हो जायगा।

कर्णपीड़ा

योग--स्वर्णक्षीरी के पत्तों को कूटकर किसी स्वच्छ कपड़े से छान कर उसका रस निकाल लें और फिर इसको अग्नि पर चढ़ा कर समभाग तेल मिलाकर मंद २ आग जलाते रहें। जब समस्त पानी जलकर केवल तेल ही शेष रह जावे तब छान कर किसी शीशी में सुरक्षित रख छोड़ें।

सेवन विधि--आवश्यकता के समय इस तेल में से कुछ बूँदें लेकर कानों में डाल दिया करें। कर्णपीड़ा तत्काल शान्त हो जाती है।

द्वितीय योग

यदि स्वर्णक्षीरी तेल न मिल सके तो इसके रस को

थोड़ा गर्म करके ४-५ बूँदें कानों में डाल लीजिए, बस ईश्वर की कृपा से पीड़ा तत्काल शान्त हो जावेगी।

जिह्वा तथा मुख के रोग

तोतलापन

यदि कोई मनुष्य भली भाँति बातचीत न कर सकता हो, तोतला कर बोलता हो, व्यख्यान देते समय जिह्वा रुक रुक जाती हो तो उसके लिए निम्नांकित योग लाभप्रद है।

योग!—अकरकरा को बारीक पीसकर इसमें स्वर्णक्षीरी का दूध मिलाकर जिह्वा पर मला करें ईश्वर की कृपा से तोतलापन का रोग एक सप्ताह में ही समूल नष्ट हो जायगा।

द्वितीय योग

योग—प्रतिदिन स्वर्णक्षीरी की शाखा तोड़कर रोगी को चाहिए कि उसे जिह्वा पर लगा लिया करे तत्पश्चात् दूध को उँलगी से जिह्वा पर मला करें। कुछ दिनों के सेवन से पूर्ण लाभ हो जायगा।

मुख के छाले

मुँह में छाले पड़ जाने का सब से कड़ा कारण आमाशय की खराबी हुआ करती है। इसको दूर करने की चिकित्सा तो यह है कि आयाशय को शुद्ध रखा जाय। आमाशय रोग की शुद्धि का योग आमाशय प्रकरण में लिखा जावेगा। हाँ छालों को तत्कालीन

दूर करने के लिए स्वर्णक्षीरी अनुपम वस्तु । आवश्यकता के समय छालों पर लगा दें। ईश्वर की कृपा से शीघ्र शान्त हो जायँगे।

फेफड़े तथा छाती के रोग

फेफड़े तथा छाती के रोगों में से जिनके लिए स्वर्णक्षीरी लाभप्रद हुई है वे निम्नांकित हैं।

खाँसी

योग—चोक की छाल १ तोला, काली मिर्च ३ माशा, नमक ३ माशा। इन सब औषधियों को बारीक पीस कर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लें और छाया में सुखा कर किसी शीशीमें सुरक्षित रख छोड़ें। आवश्यकता के समय दिन में २-३ बार एक-एक गोली मुंह में रखकर उसका रस चूसें और निगलते जावें। खाँसी के लिए विशेष प्रयोगों में यह भी एक अनुभूत है।

द्वितीय योग

योग—स्वर्णक्षीरी का दूध ३ से ५ बूंद तक बताशे में रख कर खिलावें और ऊपर से थोड़ा सा गर्म पानी पिला दें। यदि सूखी खाँसी हो दूध पिलावें। हर प्रकार की खाँसी के लिए लाभप्रद योग है।

कफयुक्त खाँसी

यदि खाँसने के पश्चात् कफ निकलता हो तो उसके निवारणार्थ निम्नांकित योग अत्यन्त उपयोगी है।

योग—स्वर्णक्षीरी के पत्ते १२ तोले, नमक १ तोला। दोनों को एक साथ पीसकर, कपरौटी करके दो सेर जंगली उपलों के मध्य रखकर आग दें और शीतल होने पर सूक्ष्म पीसकर किसी शीशी में सुरक्षित रख छोड़ें। मात्रा १ रत्ती औषधि प्रातः तथा १ रत्ती दोपहर तथा एक रत्ती सायंकाल बंगला पान में रख कर खिलाया करें जिस पर चूना कत्था आदि न लगाया गया हो। यदि कभी पान न प्राप्त हो सके तो खाँड में मिलाकर खिलावें। कफ लाने वाली खाँसी के लिए अत्यन्त लाभप्रद औषधि है।

खाँसी तथा श्वासनाशक बूटी

लाभ—स्वर्णक्षीरी के फलों को कूटकर उसका रस निकाल लें और उसे कलईदार देगची में डालकर मन्द २ आग पर पकावें जब रस काफी गाढ़ा हो जावे तो उतार कर शीतल करके छोटी २ गोलियाँ बना लें। मात्रा १ गोली प्रातः तथा सायं मुख में रखकर उसका रस चूसते रहें। यह गोलियाँ श्वास तथा हर प्रकार की खाँसी के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई हैं।

श्वास के लिए अक्सीरी तेल

यह नये दमा के लिए विशेष गुणकारी वस्तु है। स्वर्णक्षीरी के आध सेर बीजों को कूटकर चार सेर पानी में रात्रि के समय भिगो दें तत्पश्चात दूसरे दिन चार सेर

पानी और डाल कर मन्द-मन्द आग पर पकावें । बीजों से तेल निकल कर पानी पर तैर आवेगा । तत्पश्चात् उसे धीरे २ उतार कर शीशी में भर लें ।

मात्रा ३ माशा से ४ माशा तक बताशे में रख कर रात्रि के सोते समय खिलाया करें । खाँसी और नये दमा के लिए अत्यन्त लाभप्रद योग है ।

आमाशय तथा आंतों के रोग

आमाशय और अंतड़ियों के रोग में स्वर्णक्षीरी विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुई है । जिनका वर्णन नीचे किया जा रहा है ।

उदर शूल

योग—स्वर्णक्षीरी का रस ४ तोला, सैंधवा नमक ४ तोला, कीकर का गोंद ४ तोला । इन सब ओषधियों को बारीक पीसकर मिला लें और चने के बराबर छोटी २ गोलियाँ, बना लें आवश्यकता के समय १ से २ गोली तक सौंफ के अर्क के साथ सेवन करायें । पेट की पीड़ा तत्क्षण बन्द हो जावेगी ।

द्वितीय योग

योग—स्वर्णक्षीरी तेल न० १ व २ जो आसानी प्राप्त हो सके, उसे लेकर ५ से १० बूँद तक खांड मिलाकर दें और ऊपर से अर्क सौंफ तथा गर्म पानी दें । अत्यन्त लाभप्रद औषध है ।

तृतीय योग

योग—स्वर्णक्षीरी की जड़ का छिलका १ तोला, काली मिर्च ६ माशा, काला नमक ६ माशा। इन तीनों को बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें और २ से ३ गोली तक गर्म पानी के साथ खिलाया करें यह गोलियां उदर शूल के लिए विशेष उपयोगी हैं और पाचक भी हैं।

विशूचिका (हैज़ा)

यह अत्यन्त संक्रामक रोग है, इससे प्रति वर्ष लाखों प्राणी स्वर्ग सिधार जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए डाक्टरों ने बहुत ही यत्न किए परन्तु कोई विशेष सफलता नहीं मिली। इस का उपचार आयुर्वेदिक विधियों से भली प्रकार किया जाता है। हमने अपने अनुभवों के योग "देहाती अनुभूत योग संग्रह" फिटकड़ी गुण विधान, तथा अर्क गुण विधान नामक वैद्यकीय पुस्तकों में अंकित किए हैं। तथापि यहाँ पर केवल उन्हीं योगों का समावेश है कि जो स्वर्णक्षीरी से निर्माण किए जाते हैं, और विशूचिका के लिए अकसीर हैं।

हैज़ा की अचूक दवा

योग—स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल १ तोला, काली मिर्च २० नग। इन दोनों औषधियों को पाव भर

पानी में घोटकर थोड़ा पिलाते रहें इससे हैजा के रोगी को पूर्ण लाभ हो जाता है।

हैज़ा को दूर करने का तेल

प्रायः हैजा के रोगी को निद्रा नहीं आया करती है अतः इसको निद्रा लाने के लिए निर्म्नांकित योग अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुआ है। वैद्यों तथा डाक्टरों का कथन है कि यदि हैजे के रोगी को निद्रा आ जावे तो वह आराम हो जाता है इसके लिए निम्नांकित योग अत्यन्त लाभप्रद है।

विशूचिका नाशक तेल

योग—स्वर्णक्षीरी का तेल नं० १ वाला ३-३ बूँद लेकर खाँड में मिश्रित करके दो-दो घण्टे के अन्तर से रोगी को पिलाते रहें। ईश्वर की कृपा से अवश्य लाभ होगा। इसके तेल निर्माण की विधि पुस्तक के प्रारम्भ में अंकित है वहाँ से पढ़ लें।

वमन

वमन चाहे विशूचिका की हो अथवा वैसे ही हो इसको रोकने के लिए निम्नांकित योग अत्यन्त लाभ-प्रद है। हेम दुग्धा के पुष्प ३ माशा पानी में पकाकर घूंट घूंट पिलावें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही आराम होगा। इससे बच्चों की भी उल्टी दूर हो जाती है।

द्वितीय योग

स्वर्णक्षीरी के बीज कूटकर समभाग खांड मिलाकर

थोड़ा थोड़ा औषधि रोगी को देते रहें। कई बार के सेवन से वमन बन्द हो जावेगी।

दस्त

दस्त रोकने के लिए उपरोक्त योग अत्यन्त लाभप्रद है। आवश्यकता के समय इसमें से ३ माशा लेकर खसखस की ठंडाई अथवा केवल मिश्री के शर्वत के साथ दें। ईश्वर की कृपा से पूर्ण लाभ हो जावेगा।

दस्त बन्द करने के लिए गोलियाँ

स्वर्णक्षीरी के पत्तों को कूटकर उसका रस निकाल लें और उसको कलईदार देगची में पकावें। जब द्रव्य खूब गाढ़ा हो जावे तो उतार लें और शीतल होने पर २ रत्ती की गोलियाँ बना लें। मल त्याग के पश्चात् एक ठंडे पानी के साथ दें। दस्तों के लिए अत्यन्त अनुपम दवा है।

दस्त लाने के कई योग

स्वर्णक्षीरी का जुलाब अत्यन्त उत्तम है। बबासीर, फोड़ा फुंसी खुजली आदि के लिए सदैव स्वर्णक्षीरी का सेवन करना चाहिए। क्योंकि उसके कई एक जुलाब दे देने मात्र से ही उपरोक्त रोग से मुक्त मिल जाती है।

जुलाब के कई योग

इस जुलाब से नया उपदंश तो नितान्त निर्मूल हो जाता है इसके अतिरिक्त फोड़ा, फुंसी और पुराने आतशक को भी लाभप्रद सिद्ध होता है।

योग—स्वर्णक्षीरी के पत्ते अथवा शाखा ५ तोला, काली मिर्च ८ नग। आध सेर पानी में पीसकर और कपड़े से छान कर पिला दें। ५-७ दस्त हो जावेंगे।

इच्छा भेदी रेचन

(जिससे इच्छानुसार रेचन दिये जा सकते हैं)

योग—१ तोला स्वर्णक्षीरी के बीजों को थोड़ा थोड़ा पानी डाल कर भली भांति घोटें तत्पश्चात् पाव भर पानी मिला कर वस्त्र द्वारा छान लें। यह जितनी बार कपड़े में छाना जायगा उतने ही रेचन आवेंगे। यह तीव्र रेचन है जिससे दूषित दोष भली भाँति निकल जाते हैं। कई कोमल प्रकृति वाले पुरुषों को वमन भी हो जाती है, जिससे आमाशय स्वच्छ होकर चित्त हल्का हो जाता है। जब रेचन आचुकें तब मूंग की दाल की खिचड़ी घी खिलना चाहिये।

रेचक तेल

यह रेचक तेल लगभग सब रेचनों से उत्तम है। इसका कारण जुलाब, रेवन्दचीनी, अमलतास और अंरड़ के तेल आदि से तो इसलिए श्रेष्ठ है, कि इसकी मात्रा अतिन्यून है और जमाल गोटे के तेल से भी यह तेल इस लिए श्रेष्ठ है कि इसका स्वाद कड़ुवा तथा जी मिचलाने वाला होता है अपितु इसके स्वाद में यह दोष नहीं है।

योग—स्वर्णक्षीरी के बीज इकट्ठे करवा कर यथा विधि किसी तेली से तेल निकलवा लें और इसमें से

आवश्यकता के समय एक माशा से डेढ़ माशा तक गर्म दूध में मिश्रित करके पिलावें। ८-१० रेचन हो जावेंगे जब बन्द करना हो तो मिश्री का शर्बत मिला दें बस उसी समय रेचन आना बन्द हो जावेंगे।

रेचक सत्व

योग—स्वर्णक्षीरी के बीज आध सेर लेकर किसी कोरी हाँडी में डालकर दूसरी हाँडी को उस पर उलटी रखें तत्पश्चात् दोनों का मुख बन्द करके चूल्हे पर रख कर ५-७ घण्टों तक अग्नि जलाते रहें और शीतल होने पर सावधानी से ऊपर की हाँडो उतार लें और उस पर लगा हुआ स्याह रंग का सत उतार कर सुरक्षित रखें। मात्रा केवल ४ रत्ती तक खाँड में मिश्रित करके खिलावें और ऊपर से बर्फ का शीतल पानी पिलावें और प्रत्येक रेचन के पश्चात् रोगी को स्नान करवा दिया करें। जलोदर रोगी के पेट में से पानी निकालने के लिए अचूक रेचन है।

उदर कृमि

स्वर्णक्षीरी के बीजों का तेल ४ बूंद बताशे में डाल कर खिलावें और ऊपर से शीतल पानी पिला दें। थोड़े ही दिनों के सेवन से उदर कृमि मर कर पाखाने की रास्ते से निकल जायँगे।

मूत्राशय और गुदा रोग

गुदा और मूत्राशय के अनेक रोग हैं परन्तु उनमें जो बहुत बुरी बीमारियां हैं वह उष्णवात (सुजाक) तथा अर्श के नाम से कहलाती हैं। इन दोनों रोगों के लिए स्वर्णक्षीरी अत्यन्त अनुभूत सिद्ध हुई है। अतः कई योग नीचे लिखे जाते हैं।

सुजाक

सुजाक अत्यन्त बुरा रोग है यह बड़ी कठिनाई से मनुष्य का पीछा छोड़ता है। इस रोग के निवारणार्थ अनुभूत योग "देहाती अनुभूत योग संग्रह" प्रथम भाग में प्रकाशित किए जा चुके हैं। अब यहाँ कुछ योग लिखे जा रहे हैं जो कि स्वर्णक्षीरी से निर्माण किये जाते हैं।

सुजाक नाशक योग

योग--स्वर्णक्षीरी के पुष्प ३ माशा, शोरा १ माशा, गिलोय का सत्व १ माशा इन औषधियों को बारीक पीसकर एक पुड़िया बनावें और प्रातःकाल बजूरी के शर्बत के साथ दिया करें। ईश्वर की कृपा से अतिशीघ्र आराम हो जायगा।

द्वितीय योग

योग—स्वर्णक्षीरी का दूध १ माशा लेकर ५ तोला

गोघृत में मिश्रित करके प्रातः काल रोगी को पिला दिया करें इससे थोड़े दिनों में सुजाक नष्ट हो जाता है।

परहेज--सुजाक के रोगी को सब प्रकार की गर्म और तीक्ष्ण वस्तुओं से अलग रखना चाहिए।

भोजन--भोजन के लिए गाय के दूध की खीर देनी चाहिए और अन्य सब वस्तुओं से बचाव रखें।

अर्श

यह एक अत्यन्त कष्ट दायक रोग है जिसकी चिकित्सा के लिए लोग सैकड़ों रुपये खर्च कर रहे हैं। परन्तु ईश्वर ने इन बीमारियों को दूर करने के लिए ऐसी २ जड़ी बूटियाँ पैदा की हैं कि जिनके सेवन से शीघ्र लाभ होता है। उन्हीं में स्वर्णक्षीरी भी अर्शनाशक औषधि है। योग इस प्रकार है।

अर्शनाशक क्षार

योग–स्वर्णक्षीरी क्षप को लेकर छाया में सुखा करके जला लें और उसकी राख को आठ गुने पानी में घोल करके ३ दिन तक पड़ा रहने दें। इस बीच में दिन में ३ बार हिलाते रहें तत्पश्चात् उस पानी को निथार कर पकावें सम्पूर्ण पानी जल जाने पर नीचे श्वेत रंग का क्षार रह जावेगा उसे बारीक पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। बस यही अर्शनाशक क्षार है। इसे केवल २ रत्ती प्रातःकाल मक्खन या मलाई में रखकर सेवन

कराया करें । अर्श की अनुपम औषधि है ।

बवासीर के मस्सों को गिराने के लिए योग

योग--स्वर्णक्षीरी की जड़ को नीबू के रस में घिसकर प्रतिदिन लेप किया करें, कुछ ही समय के सेवन से मस्से गिर जाते हैं ।

सूचना--यदि नीबू का रस न मिल सकता हो तो पानी में ही घिस कर लगा दिया करें ।

बवासीर नाशक धूनी

योग--स्वर्णक्षीरी के पत्तों को छाया में सुखा कर बारीक पीस लें और आवश्यकता के समय दहकते हुए कोयलों पर डाल कर मस्सों पर धूनी दिया करें । थोड़े दिनों के निरंतर सेवन से मस्से शुष्क होकर गिर जाते हैं ।

अर्श पीड़ा को शान्त करने का सरल योग

योग--अर्श (बवासीर) पीड़ा कोई साधारण पीड़ा नहीं है इसका अनुभव उन्हीं को है जो लोग इस रोग में ग्रसित रह चुके हैं। इस के रोगी को इतना कष्ट होता है कि रोगी मारे कष्ट के बेचैन हो जाता है । उसे ऐसा प्रतीत होता है कि कोई चक्कू से मांस निकाल रहा है । इस पीड़ा को शीघ्र दूर करने के लिए कुछ अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि अत्यन्त उत्तम हैं ।

योग--स्वर्णक्षीरी की जड़ को पानी में पीसकर लेप सा तैयार कर लें और आवश्यकता के समय मस्सों पर लेप कर दिया

करें। ईश्वर की कृपा से तत्काल पीड़ा बन्द हो जायगी।

चर्म रोग

यह सभी मानते हैं कि स्वर्णक्षीरी उच्च कोटि की रक्त शोधक है अतः बहुत से चर्म रोगों पर अत्यन्त लाभ प्रद सिद्ध हुई है। इनका वर्णन निम्नांकित किया जाता है।

उपदंश

यह अत्यन्त घृणित एवं लज्जाजनक रोग है इस रोग से ईश्वर सभी को बचाये। परन्तु आजकल यह रोग प्रत्येक घर में फैल रहा है। यही कारण है कि आज कल इसके चिकित्सक भी स्थान स्थान पर उत्पन्न हो रहे हैं। यह रोग प्रत्येक वर्ण के लोगों में अधिकांश पाया जाता है। इस रोग की चिकित्सा किसी अनुभवी वैद्य आदि से करानी चाहिए परन्तु जो लोग इसकी चिकित्सा किसी ग़ैर अनुभवी लोगों से कराते हैं वे लोग अनेक कष्टों को भोगते हैं। अतः इसके संबंध में कुछ योग नीचे लिखे जाते हैं जो कि स्वर्णक्षीरी से बनते हैं।

उपदंश का रेचन

यह रेचन उपदंश के दूषित दोष को करने के लिए सर्वोत्तम है। यदि प्रथम इस रेचन के द्वारा उपदंश के विषैले दोष को पृथक् कर दिया जावे और फिर कोई साधारण से साधारण उपदंश नाशक योग भी सेवन किया जावे तो भी ईश्वर की कृपा से आरोग्यता प्राप्त हो जाती है।

योग—स्वर्णक्षीरी के बीज १ माशा से ३ माशा तक लेकर यथा शक्ति पानी में घोंटकर रागी को पिला दें इन से वमन तथा दस्त जारी हो जायेंगे और जब तक शरीर से वमन व दस्त दूर न होंगे तब तक रोग निर्मूल न होगा इससे ईश्वर की कृपा से उपदंश ही प्रथम दिन के घाव सूख जायँगे। दूसरे व तीसरे दिन मात्रा का परिमाण कम कर दें। इन तीन दिनों के सेवन से ही पर्याप्त लाभ प्राप्त हो जायगा। यह स्मरण रहें कि इससे कई मनुष्यों को इतने अधिक वमन तथा दस्त आते हैं कि मनुष्य निढाल हो जाता है। अतः घबड़ाना न चाहिए वे स्वयं ही बन्द हो जाया क ते हैं। खाने के लिए रोटी घी के साथ प्रातः तथा सायंकाल खिलाते रहें। अन्य समस्त वस्तुओं से परहेज करना आवश्यक है।

उपदंशनाशक योग

योग—स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल १ तोला, कालीमिर्चनग ५, आध सेर पानी में घोंट छान लें और उसमें ४ तोला उत्तम मधु मिश्रित कर प्रातः काल रोगी को पिलाया करें कुछ ही दिनों के सेवन से रोग समूल नष्ट हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यह रोग फोड़ा फुंसी, कण्डु दद्रु, चर्म दल, कुष्ठ आदि को भी लाभप्रद है और उच्च कोटि का रक्तशोधक है। सेवन काल में बेसनी रोटी घी के साथ खिलाते रहें इसके अतिरिक्त कोई वस्तु न खिलावें।

उपदंश के लिए अत्युत्तम घृत

निम्नलिखित विधि से बनाया हुआ घी उपदंश के रोगियों को तथा दूषित रक्त वाले रोगियों के लिए अमृत के तुल्य गुणकारी है। इसको कुछ समय निरंतर सेवन करने से शरीर नितान्त शुद्ध हो जाता है।

योग--स्वर्णक्षीरी के पत्ते व हरी हरी शाखायें लेकर कूटलें और वस्त्र द्वारा निचोड़ कर उस का रस निकाल लें जिसकी तौल कम से कम १ सेर हो। तत्पश्चात् इस को किसी कलईदार बर्तन में डाल कर उसमें आध सेर गाय का घी मिलावें और मन्द मन्द आग पर पकावें। जब सम्पूर्ण पानी जल कर केवल घृत मात्र शेष रह जावे तब उसे नीचे उतार कर शीतल करके किसी शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि--रोगी को यथा शक्ति २ तोला से ३ तोला तक बेसनी रोटी के साथ खिलवाया करें। इस से प्रति दिन दो-तीन दस्त हुआ करेंगे और कुछ ही समय के सेवन से उपदंश का सम्पूर्ण दोष दूर हो जायगा और रक्त शुद्ध हो जायगा यदि रस का निरंतर सेवन किया जावे तो कुष्ठ को भी लाभ हो जाता है।

कण्डु नाशक तेल

योग--स्वर्णक्षीरी के तेल को समाभाग लेकर सरसों के तेल में मिश्रित करके मालिश किया करें कण्डु के लिए लाभप्रद है।

रक्तशोधक गोलियां

योग—स्वर्णक्षीरी के बीजों को पीसकर जल द्वारा चने के दाने के बराबर गोलियाँ बना लें और एक गोली प्रातःकाल ताजा पानी के साथ देते रहें। उच्च कोटि की रक्तशोधक गोलियाँ हैं।

फोड़ा फुंसी के लिए अनुभूत लेप

जो फोड़ा बड़ी बड़ी दवाइयाँ सेवन करने पर भी ठीक न होता हो तथा बार बार फूट कर भर जाता हो उसके लिये निम्नांकित मरहम अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है केवल दो चार बार लेप करने से ही फोड़े का चिन्ह भी अवशेष नहीं रहता है। हमने कई वर्षों के पुराने फोड़ों पर इस का अनुभव करके सफलता प्राप्त की है।

योग—स्वर्णक्षीरी के बीज अवश्यकतानुसार लेकर खाल में डालें फिर इसमें थोड़ा सा पानी मिला कर इतना खरल करें कि वह अत्यन्त सूक्ष्म और कोमल सा मरहम बन जाये। तत्पश्चात् इस को फोड़े पर लेप कर दिया करें इसी प्रकार ३-४ दिन तक लेप करते रहें। ईश्वर की कृपा से अवश्य आराम हो जायगा। अनुभूत योग है।

बाजीकरण

(वीर्य को गाढ़ा करने वाला और प्राकृतिक स्तम्भकयोग)

योग—स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल को छाया में खुश्क करके बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

आवश्यकता के समय इसमें से चार माशा चूर्ण लेकर गरम किए हुए दूध पर छिड़ कर कुछ मीठा कर मिला कर पिलाया करें। देखने में तो एक साधारण सी वस्तु है परन्तु गुणों से युक्त है।

स्वर्णक्षीरी गुलकन्द

निम्न प्रकार से बनाया हुआ गुलकन्द अनेक रोगों लिए लाभप्रद है अतः इसे बनाकर लाभ अवश्यउठावें।

योग—स्वर्णक्षीरी पुष्प १ भाग, शक्कर ४ भाग दोनों को हाथों में मसल कर एक जान कर दें और फिर धूप से रख दें। दो चार तक दिन किसी डिब्बे में सुरक्षित रखें। अत्यन्त मनोहर सुनहरी रंग का गुलकंद तैयार होगा। मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक दें। आर्द्र तथा शुष्क कण्डु, सुजाक, प्रमेह आदि को लाभप्रद है।

बनावटी शिलाजीत

योग—स्वर्णक्षीरी के पत्तों को कूटकर उनका रस निकाल लें और उस रस को मिट्टी के बर्तन में डाल कर अग्नि पर पानी जल जाने के पश्चात् जो गाढ़ी वस्तु शेष रहजावेगी पकावें वह बिल्कुल शिलाजीत के सदृश होगी। इतना ही नहीं बल्कि जल में डालने से असली शिलाजीत की तरह डोरे भी देगी। इसके अतिरिक्त लाभ में भी शिलाजीत से मिलती जुलती सिद्ध होगी।

प्रमेह नाशक चूर्ण

योग—स्वर्णक्षीरी की जड़ की छाल बारीक पीसकर उसमें समभाग चीनी मिलाकर चूर्ण बनालें और प्रातःकाल धारोष्ण दुग्ध के साथ दिया करें। प्रमेह तथा स्वप्न दोष के लिए बहुत लाभप्रद योग है। वीर्य कोगाढ़ा करके सन्तानोत्पन्न करने योग्य बना देती है।

स्वर्णक्षीरी से बनने वाली भस्में

स्वर्णक्षीरी केवल दवाओं के ही काम में नहीं आती है बल्कि उससे कतिपय धातु और उप धातुओं को भी भस्म किया जाता है। विशेषकर रासायनिक लोगों के लिए यह बूटी जीवनदायिनी है इसके द्वारा प्रायः उड़ने वाली वस्तुओं को स्थायी और मोम सदृश बनाया जाता है। आगे के पृष्ठों में इस का वर्णन मिलेगा। इसके द्वारा भस्म बनाने में सावाधानो से काम लेना चाहिए क्योंकि तनिक सी असावधानी में बना बनाया काम बिगाड़ जाने की संभावना है। यदि किसी कारण से भस्म न बनी हो तो पुनः उसे द्वितीय बार आग में फूंक लें।

उच्चकोटि की स्वर्ण भस्म

योग—शुद्ध स्वर्ण १ तोला लेकर किसी पक्की खरल में डाल कर स्वर्ण क्षीरी के बनाये हुए द्वारा रस खरल करें। जब खरल करते २ पूरा पाव भर पानी प्रविष्ट

हो जावे तो उस की टिकिया बनाकर स्वर्ण क्षीरी की जड़ के आध पाव कल्क में रखकर कपरौटी करके २० सेर उपलों की आग में फूंकें और शीतल होने पर निकाल लें और पुनः पाव भर स्वच्छ रस में खरल करके टिकिया बना लें और उसी कल्क में बन्द करके आग में फूँकें। प्रत्येक बार १-१ सेर उपले कम करते जावे। यहाँ तक कि सम्पूर्ण २० अग्नि पूर्ण हो जायें। अत्युत्तम रक्त वर्ण की भस्म तैयार होगी।

योग—स्वर्ण क्षीरी का रस इस प्रकार बनावें। प्रथम स्वर्ण क्षीरी के पत्तों को कूटकर किसी स्वच्छ कपड़े से निचोड़ कर रस निकाल लें तत्पश्चात् इस को आग पर रख कर पकावें। थोड़ी देर के तत्पश्चात् पानी फट जावेगा इसको किसी वस्त्र से छान कर काम में लावें।

सेवन विधि—१ से २ चावल तक की मात्रा लेकर मक्खन या मलाई के साथ प्रातःकाल सेवन कराया करें। यह भस्म हृदय को बलकारक तथा मस्तिष्क, आमाशय और अंतड़ियों को बल प्रदाता है। यकृत की निर्बलता, तथा शंका, दस्त, पागलपन, सनक आदि को अत्यन्त लाभप्रद है और उच्चश्रेणी का रक्तशोधक है।

रजत भस्म खुराकी

१ कर्ष शुद्ध रजत का पत्र बनावें जो कि अत्यन्त

बारीक कागज के समान हो उसको अग्नि में तपाकर स्वर्णक्षीरी के रस में बुझावें इसी प्रकार २१ बार बुझावें फिर स्वर्णक्षीरी के पत्तों तथा शाखों के पाव भर कल्क में में कपरौटी करके १५ सेर उपलों की आग किसी निर्वात स्थान में दें और शीतल होने के पश्चात् निकालकर पुनः पूर्ववत् कल्क में लपेटकर आग में फूंकें। जब ज्ञात हो जावे कि रजत का पत्र नितान्त कोमल भस्म हो चुका है तो इसको सूक्ष्म पीसकर किसी शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—मात्रा को २ चावल से चार चावल तक मक्खन अथवा मलाई में लपेटकर दिया करें।

लाभ—शरीर के उत्तम अंगों को बल देता है और प्रमेह नाशक भस्म है।

पारदपय रजत भस्म नं० १

योग—१ कर्ष शुद्ध रजत को रुपये के बराबर गोल बनालें और उसको तपा तपा कर स्वर्णक्षीरी के रस में १०१ बार बुझावें तत्पश्चात् पुनः स्वर्णक्षीरी के जड़ के पाव भर कल्क में लपेट कर कपरौटी करके ४ सेर उपलों की निर्वात् स्थान में आग दें इसी प्रकार सात सम्पूर्ण आग दे चुकने के बाद भस्म तैयार होगी जो कि १ तोला भस्म ६ तोला पारे को खुश्क करके गिरह बना देती है। खाने के लिए भी उत्तम है।

पारदपय रजत भस्म नं० २

योग——१ कर्ष रजत का पत्र बनावें जो दुवन्नी से किसी प्रकार भी मोटा न हो तत्पश्चात् इसको पाव भर स्वर्णक्षीरी के पत्तों अथवा शाखाओं के लुगदे में कपरौटी करके ३-३ सेर के दो उपलों के मध्य में रख कर उपलों के मुंह को मिट्टी से बन्द कर दें तदुपरान्त भूमि में एक गढ़ा बनाकर निर्वात स्थान में आग फूकें। तीसरे दिन आग शान्त होगी तत्पश्चात् पत्र को निकालकर पुनः उसी विधि से आग दें। बस सर्वोत्तम भस्म तैयार है।

ताम्र की श्वेत वर्ण की भस्म तैयार करना

स्वर्णक्षीरी के क्षापों को जलाकर इसका क्षार निकाल लें। पहले १०-१२ जयपुरी पैसों को ४०० बार स्वर्ण-क्षीरी के रस में बुझावें फिर स्वर्णक्षीरी के पाव भर क्षार के अन्दर रख एक मन उपलों की अग्नि में फूंकें इसी प्रकार ६ या ७ बार आग देने से समस्त पैसों की श्वेत भस्म तैयार होगी। यह भस्म नेत्रों के विकारों के लिए विशेष उपयोगी है। मरहमों के साथ मिश्रित करके इस्तैमाल की जाती है। यह खाने से अनेक रोगों को लाभ होता है।

ताम्र भस्म बनाने की द्वितीय विधि

हड़ताल वर्किया तथा सोमलखार प्रत्येक ६ माशा लेकर खरल में डालकर पीसें और स्वर्णक्षीरी के पत्तों रस

में के गूंध कर टिकिया बनालें तत्पश्चात डबल पैसे को इस टिकिया के मध्य रख कर, टिकियों को आध सेर स्वर्णक्षीरी के लुगदे में लपेट कर ऊपर से सेर भर खद्दर का कपड़ा लपेट दें और भूमि में गढ़ा खोदकर निर्वात स्थान में जंगली कंडों की गजपुट की आग दें । शीतल होने के पश्चात् निकाल लें । अति सुन्दर श्वेत वर्ण की भस्म तैयार होगी।

सेवन विधि—॥ चावल से १ चावल तक की मात्रा लेकर मक्खन या मलाई में रखकर खिलावें । स्तम्भन कर्ता, वीर्योत्पादक, वाजीकरण, आमवात, तथा कटिपीड़ा आदि के लिए लाभप्रद है ।

बंग भस्म

कलई शुद्ध (जिस को अग्नि पर पिघला कर ७ बार तेल में बुझा दिया हो) १ तोला लेकर कैंची से चावल के बराबर छोटे २ टुकड़े बना लें और स्वर्णक्षीरी के पत्तों अथवा जड़ के पाव भर कल्क में पृथक् २ रखकर नीचे ऊपर कल्क देकर १०-१२ सेर उपलों की आग दें । अत्युत्तम श्वेत रंग की भस्म तैयार होगी । इसे बारीक पीसकर सुरक्षित किसी स्वच्छ शीशी में भर रखें । मात्रा १ रत्ती मक्खन के साथ दिया करें । प्रमेह तथा स्वप्नदोष के लिए विशेष लाभप्रद है ।

पारदमिश्रित नाग भस्म

जीर्ण से जीर्ण उष्णवात के लिए अनुभूत औषधि)

शुद्ध सीसा १ तोला लेकर अग्नि पर पिघलावें और पिघल जाने पर १ तोला शुद्ध पारद में मिला दें तत्पश्चात् खरल में डाल कर स्वर्णक्षीरी के पत्तों के रस के साथ खरल करें यहाँ तक कि खरल करते २ पाव भर रस शुष्क हो जाये। तत्पश्चात् इसकी टिकिया बनाकरस्वर्णक्षीरी के डेढ़ पाव नुगदे में कपरोटी करके १० सेर उपलों की आग दें और शीतल होने पर निकाल लें बस भस्म तैयार है।

सेवन विधि—१ रत्ती मात्रा लेकर प्रातःकाल मक्खन में रख कर दिया करें। सुजाक के लिए सर्वोत्तम औषधि है।

हड़तालादि उड़ने वाली वस्तुओं की भस्में

नीचे सामेलखार हरताल, और सिंगरफ आदि की भस्मों का वर्णन किया जाता है।

सोमलखार भस्म

कढ़ाई में १ तोला श्वेत वर्ण की संखिया की डली रखकर थोड़े २ स्वर्णक्षीरी के बीज डालते जावें और नीचे मन्द-मन्द आग जलाते जावें जब तेल निकलने पर आ जावे तब बन्द कर दें और शीतल होने के पश्चात् कढ़ाई को देखें तो श्वेत रंग की भस्म तैयार मिलेगी। यदि कुछ कमी रह जावे तो पुनः यही क्रिया

करें किन्तु इसके धुएँ से आँख को बचाना आवश्यक है। पीस कर शीशी में सुरक्षित रख छोड़ें।

सेवन विधि–खस खस के दाने के समान मात्रा लेकर मक्खन अथवा मलाई के साथ दिया करें।

लाभ–उपदंश नाशक उच्चश्रेणी की वाजीकरण है। घी दूध का अधिक सेवन करना आवश्यक है।

वर्किया हड़ताल भस्म

योग—स्वर्ण क्षीरी के पत्तों का ५ सेर नुगदा बनाकर एक कढ़ाई में २॥ सेर पहले रख कर उस पर एक तोला हड़ताल वर्किया की डली रख दें तदुपरान्त शेष नुगद्दा भी ऊपर से रख दें। बाद को इसके ऊपर दूसरा वर्तन रखकर भली भाँति कपरौटी करके शुष्क होने को चूल्हे पर चढ़ा कर लगातार १८ घंटे तक मन्द मन्द आग जलाते रहें। श्वेत वर्ण की भस्म तैयार होगी यह। भस्म सर्व प्रकार के ज्वरों तथा बहुत से नेत्र रोगों के लिए लाभप्रद है।

सत्व हड़ताल वर्किया

योग—वर्किया हड़ताल ५ तोला को लेकर किसी पक्के खरल में डाल कर पीसें और घोंटते २ पाव भर स्वर्णक्षीरी का रस प्रविष्ट कर दें। तत्पश्चात् इसको किसी मिट्टी की कोरी हांडी में डाल कर ऊपर से ढक्कन बन्द करके भली भाँति कपरौटी करके चूल्हे पर चढ़ा

कर यथा विधि सत्व उड़ा लें परन्तु ऊपर वाले बर्तन के ऊपर चार तह का खद्दर का वस्त्र पानी से भिगो कर रखें। जब पानी शुष्क हो जावे तो पुनः भिगो दिया करें। इसी प्रकार सत्व प्राप्त करके पुनः स्वर्णक्षीरी के रस में खरल करके उपरोक्तविधि से पुनः सत्व उड़ालें परन्तु जो औषधि सत्व उड़ाते समय नीचे बर्तन की तली में बैठ जावे उसे खुरच कर उस में सत्व मिश्रित करके सत्व उड़ाते रहें और इस क्रिया को उस समय तक जारी रखें कि सत्व उड़ना बन्द हो जावे और सम्पूर्ण हरताल नीचे इकट्ठी हो जावे। यही वह तल स्थित तथा स्थायी हरताल है जिसके लिए रासायनी लोग ढूढ़ते फिरते हैं यह अनुपम वस्तु है। इस हड़ताल को स्वर्णक्षीरी के पाव भर पत्तों के लुगदे में बन्द करके २० सेर उपलों की आग में फूंकें। उत्तम भस्म तैयार होगी। मात्रा १ चावल मलाई में रख कर खिलाया करें।

लाभ-श्वांस और कफ़ की बीमारियों के लिए चमत्कारी वस्तु है। वाजीकरण शक्ति बढ़ाने के लिए अत्युत्तम है।

सिंगरफ मोमिया

योग—सिंगरफ रूमी की २ तोला की डली लेकर ५ तोला स्वर्णक्षीरी के बीजों के बीच रख कर गेहूँ के गुँधे हुए आटे के मध्य में लपेटकर आग में दबा दें

जब ऊपर से आटा स्याह हो जावे तब निकालकर डली निकाल लें और गरम गरम को हेमदुग्धा के तेल में बुझा दें तत्पश्चात् स्वर्णक्षीरी के बीज और आटे के मध्य में बन्द करके पहले की भाँति आग में दबा दें। इस क्रिया को तब तक जारी रखें कि जब तक सिंगरफ की डली मोम के समान हो न जावे। इस को सावधानी से डिब्बी में बन्द करके रखें। १ चावल से ४ चावल तक की मात्रा मलाई या मक्खन में रख कर दें। उपदंश और पुंसत्व की निर्बलता की उत्तम औषधि है।

तूतिया की श्वेत रंग की भस्म

तूतिया की एक बड़ी डली लेकर एक चीनी की प्लेट में रखकर उस पर स्वर्णक्षीरी का दूध इतना डालें कि जिस से वह भली भाँति तर हो जावे तत्पश्चात् इस प्लेट को धूप में रख दें। दूसरे दिन तक शुष्म हो जावेगी तत्पश्चात् उस डली को स्वर्णक्षीरी के दूध से तर कर दें। ५-६ बार की क्रिया से श्वेत वर्ण की खिली हुई वजनी भस्म तैयार होगी। यह भस्म अत्यन्त गुणकारी है।

कपूर के रस की भस्म

(उपदंश तथा कुष्ठ की औषधि)

प्रथम स्वर्णक्षीरी के बीजों का १ सेर तेल प्राप्त कर लें। पुनः लोहे के तवे आदि पर अभ्रक का टुकड़ा रख कर उस पर १ तोला कपूर की डली रखें और

उस डली पर उक्त तेल बूँद बूंद टपकाते जावें । जब सम्पूर्ण तेल शुष्क हो जावे तो अग्नि बन्द कर दें । ईश्वर की कृपा से कपूर स्थायी हो गया होगा । अब इस को स्वर्णाक्षीरी के पाव भर फूलों के नुगदे में रख कर गोला बना कर इस पर चार सेर पुराने वस्त्र को लपेट दें और बन्द मकान में ले जाकर एक दहकता हुआ कोयला ऊपर रख दें । चौथे दिवस शीतल होने पर अत्यन्त सावधानी से भस्म निकाल लें और पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें । मात्रा १ चावल लेकर मलाई या मक्खन में लपेट कर दिया करें । उपदंश तथा कुष्ठ की एकमात्र औषधि है ।

हरताल गोदन्ती भस्म

हरताल गोदन्ती की डली को लेकर इमामदस्ते में डालकर कूटें और सूक्ष्म होने पर इसको खरल में डाल कर तीन घंटे पर्यन्त स्वर्णाक्षीरी के रस में खरल करें और पुनः इसकी टिकिया बनाकर कूजे में कपरौटी करके २० सेर उपलों की आग दें । इसी प्रकार ३ बार आग दें अत्यन्त अकसीरी गुणों से युक्त भस्म तैयार होगी । पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय काम में लावें ।

सेवन विधि--१ रत्ती से दो रत्ती तक की मात्रा मक्खन आदि में रखकर दिया करें सुजाक, प्रमेह श्वेत-प्रदर, पित्तज्वर आदि को लाभप्रद है ।

कृष्णाभ्रक भस्म

(जीर्ण ज्वर की अक्सीर दवा है)

पुराने ज्वर और खाँसी के रोगियों के लिए काले अभ्रक की भस्म आवश्यर्यजनक गुणकारी है । अभ्रक भस्म बनाने की अनेक विधियाँ हैं उनमें से एक विधि नीचे वर्णन की जाती है जो कि जीर्ण ज्वर के अतिरिक्त अन्य रोगों के लिए भी लाभदायक वस्तु है ।

विधि—कृष्णाभ्रक १० तोला को कोयलों की आग में डालकर भली भांति रक्त वर्ण कर लें और स्वर्णक्षीरी के पत्तों के रस में बुझा दें इसी प्रकार न्यूनातिन्यून २१ बार बुझावें फिर किसी पत्थर के पक्के खरल में डाल कर पीसें और स्वर्णक्षीरी के पत्तों का रस डाल कर भली भांति जोरदार हाथों से खरल करते रहें । कम से कम ६ घंटा तक खरल करने के पश्चात् टिकिया बना लें और मिट्टी के कूजे में सम्पुट करके किसी निर्वात् स्थान में जाकर बीस सेर उपलों की आग में फूंकें । इसके बाद पुनः ६ घंटे खरल करके कपरौटी करके आग दें । इसी प्रकार कम से कम १५ आग अवश्य देना चाहिए तत्पश्चात् बारीक पीसकर किसी शीशी में सुरक्षित रखें ।

सेवन विधि—मात्रा १ रत्ती से दो रत्ती तक अर्क गाजबां या शर्बत बजूरी के साथ दिया करें अथवा किसी

अनुकूल चूर्ण में मिश्रित करके सेवन करायें। जीर्ण ज्वर, खाँसी तथा प्रमेह आदि के लिए लाभप्रद है।

स्वर्णक्षीरी का स्वादिष्ट शाक

योग—स्वर्ण क्षीरी की नरम नरम कोपलें तोड़ कर चाकू से छील कर छोटे २ टुकड़े बना लें तत्पश्चात् यथा-विधि मांस में मिश्रित कर अथवा पृथक् ही शाक बना लें।

लाभ-फोड़ा, फुंसी खुजली तथा उपदंश आदि के लिए अत्यन्त लाभदायक है और अत्यन्त वाजीकारण शक्ति है तथा प्रमेह के लिए लाभकारी है।

समस्त रोगों को दूर करने के लिए गोलियाँ

स्वर्ण क्षीरी के हरे पत्तों को कूटकर रस निकाल लें और कलईदार देगची में डालकर मन्द मन्द आग पर पकावें। जब रस गाढ़ा हो जावे तो उतार कर रत्ती रत्ती की गोलियाँ बना लें। उनको सुन्दर बनाने के लिए उन पर चाँदी के वर्क चढ़ा लें।

सेवन विधि—मात्रा १ गोली प्रातःकाल और एक गोली सायंकाल ताजा पानी अथवा उचित शर्बत के साथ दिया करें।

लाभ--यह गोलियाँ उदर पीड़ा, शिर शूल, दस्त, मरोड़, दमा, खाँसी, कफ जनित खाँसी, फुंसी, चर्म रोग, ज्वर, उपदंश, सुजाक, प्रमेह और शीघ्रपतन आदि के लिए अत्यन्त गुणकारी है।